The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-4, January 2023
www.theresearchdialogue.com

कौशल विकास मिशन से महिलाओं का संवरता भविष्यः देवीपाटन मण्डल के श्रावस्ती जनपद का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

वेद प्रकाश द्विवेदी
समाजशास्त्र विभाग
डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध वि0वि0
अयोध्या उत्तर प्रदेश
Email- vedprakashd1991@gmail.com

प्रो0 (डॉ0) श्रीमती शशि बाला
समाजशास्त्र विभाग
लाल बहादुर शास्त्री पी0जी0 कॉलेज, गोण्डा
डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध वि0वि0
अयोध्या) उत्तर प्रदेश

सारांश :

किसी भी देश के तीव्रगति से विकास करने के लिए आवश्यक है, कि वहाँ पर महिला और पुरूष बराबर कार्यशील रहें अगर इन दोनों में से कोई एक पक्ष ही कार्य करता है और दूसरा नही करता तो विकास रूपी रथ का पहिया धीमा हो जाता है और इसका प्रमाण भी हमें दिखाई दे रहा है। पाश्चात्य देशों में महिला–पुरूष में कार्य को लेकर कोई खास भेद–भाव दिखाई नही देता इसी का परिणाम है, कि वे देश तीव्रगति से विकास कर विकसित देश बन गये परन्तु जिन–जिन देशों में महिला–पुरूष में भेद– भाव व्याप्त रहा वे अभी उस शिखर तक पहुंचने से कोसो दूर है। जहाँ तक भारत की बात है, तो भारत में भी महिलाओं के प्रति विडम्बना यह रही कि आज तक के इतिहास में कुछ समय–काल को छोड दिया जाय तो उन्हें वह सम्मान व अवसर नही दिया गया जिसकी आवश्यकता थी महिलाओं को सुकोमल व कमजोर बनाकर घर के अन्दर कैद रखा गया नतीजा यह हुआ की आज हमें जिस स्थान पर होना चाहिए था उससे कही दूर खड़े है। परन्तु वर्तमान समय में सरकार ने अतीत से सबक लेकर महिलाओं को समाज की मुख्य धारा में लाने हेतु तमाम विकास कार्यक्रम चलाया है जिससे महिलाएं भी पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर विकास रूपी रथ को आगे बढा सकें उसी कडी में भारत सरकार ने कौशल विकास योजना का शुभारम्भ कर प्रशिक्षण के माध्यम से स्वरोजगार का द्वार खोलकर आर्थिक रूप से सशक्त बनाने का सराहनीय कार्य किया है, जिसका अध्ययन करने हेतु **उ0प्र0 के देवीपाटन मण्डल के श्रावस्ती जनपद** का चयन शोधार्थी द्वारा किया गया है और यह

जानने का प्रयत्न किया गया है, कि **श्रावस्ती जनपद** की महिलाओ के ऊपर इस योजना का क्या प्रभाव पड़ा है? क्या उनके जीवन में कुछ बदलाव आया है? और नही तो क्यो? आदि।

मुख्य शब्द : महिला सशक्तिकरण, कौशल विकास योजना, प्रशिक्षण, रोजगार, समानता आदि।

कौशल विकास योजना (संक्षिप्त परिचय):–

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना का प्रारम्भ भारत सरकार द्वारा **जुलाई 2015** में किया गया। इस योजना का मुख्य उद्देश्य युवाओं को प्रशिक्षण (ट्रेनिंग) देकर उन्हें रोजगार के लिए तैयार करना है।

इस योजना में तीन महीना, छः महीना और साल भर के लिए रजिस्ट्रेशन होता है अवधि पूर्ण हो जाने के पश्चात् प्रमाण पत्र प्रदान किया जाता है, जो पूरे भारत में मान्य होता है जिससे प्रशिक्षित युवा/युवती रोजगार प्राप्त कर सकती है।

कार्यशक्ति में महिला भागीदारीः– जैसा कि विदित है, कि भारत एक पुरूष प्रधान देश रहा है। यहां पर प्रारम्भ से ही महिलाओं के प्रति भेद–भाव विद्यमान रहा है उन्हें घर से बाहर निकलकर रोजगार करने या कार्य करने से वंचित रखा गया जिसका नतीजा रहा कि पुरूष प्रधानता वाले इस समाज में महिलाएं काफी पिछड़ गयी परन्तु स्वंतत्रता पश्चात् अपनी सरकार बनी संविधान का निर्माण हुआ जिसमें महिलाओं को तमाम अधिकारो से लैश कर दिया गया जैसे– समानता का अधिकार समान कार्य समान वेतन का अधिकार, लिंग के आधार पर भेदभाव की समाप्ति आदि साथ ही भारत सरकार विविध राज्य सरकारों ने महिलाओं को सशक्त करने के लिए तमाम विकास कार्यक्रम चलाना प्रारम्भ कर दिया जिसका नतीजा रहा कि महिलाएं भी उसका भरपूर लाभ उठाकर सशक्त तो होने लगी परन्तु आशानुरूप परिणाम सामने नही आये कार्यशक्ति में महिलाओं की भागीदारी आज भी चिन्ता का विषय बना हुआ है। विश्व बैंक की रिपोर्ट 29 मई 2017 के अनुसार 131 देशों में भारत का स्थान 120वां था यहां पर पुरूष और महिला की भागीदारी में आधे से भी ज्यादा अन्तर है। राज्यों की बात की जाय तो **मिजोरम, हिमांचल प्रदेश, मेघालय, अरूणांचल प्रदेश, तेलंगाना** आदि में तो स्थिति कुछ ठीक है परन्तु **पंजाब, दिल्ली, उ0प्र0, जम्मू, हरियाणा** आदि राज्यों में इनकी भागीदारी एक चिंता का विषय है। जहां तक श्रावस्ती जनपद में महिलाओ के भागीदारी का प्रश्न है तो यहां पर महिलाओं की भागीदारी नेपाल से सटे सिरसिया क्षेत्र को छोड़ दिया जाय जो थारू जनजाति बाहुल्य इलाका है जहां पर महिलाए कार्य में प्रतिभाग करती है जो हमेशा सिलाई, कढ़ाई, बुनाई के साथ–साथ अन्य श्रम में संलग्न रहती है जिससे अपने आपकों आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के साथ–साथ परिवार को भी सशक्त बनाती है। इसके अलावा अन्य क्षेत्र में महिलाएं बहुत अल्प मात्रा में ही कार्य में प्रतिभाग करती है जो एक विचारणीय मुददा है। जो समानता के अधिकार पर प्रश्न चिन्ह लगाता है।

महिलाएं और कौशल विकास योजनाः–

परिवार एवं देश के विकास में महिलाओं की भूमिका हमेशा ही सराहनीय रही है जब उन्हे उचित अवसर नही मिल रहा था तब भी अपने कौशल क्षमता का प्रदर्शन घर के कार्यों बच्चों के लालन–पालन, साफ सफाई आदि में दिखाती थी परन्तु पाश्चात्य शिक्षा व कौशल विकास के योजना के चलते उन्हे प्रशिक्षण का सुनहरा अवसर मिला जिसका लाभ उठाकर आज तमाम महिलाएं प्रशिक्षण प्राप्त कर रोजगार में संलप्ति है। जिससे धनार्जन कर अपने आपको सशक्त कर रही है जिससे महिलाओं का परिवेश बदल रहा है उनके स्थिति में उतरोत्तर वृद्धि हो रही है परन्तु उ0प्र0 के देवीपाटन मण्डल का श्रावस्ती जनपद एक ऐसा क्षेत्र है जहां पर प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तमाम केन्द्र खुल जाने के बावजूद भी यहां की तमाम महिलाएं प्रशिक्षण प्राप्त करने से कतराती है जिसके कारण तमाम महिलाएं आज की अकुशल ही दिखाई पड़ती है।

जो कौशल विकास योजना के लक्ष्य पर प्रश्न चिन्ह लगा रहा है इस योजना के माध्यम से महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देना भी है यह उनकी कार्य भागीदारी और उत्पादन क्षमता में वृद्धि भी सुनिश्चित करता है अतः आज जरूरी है, कि महिलाएं संचार कौशल, नेतृत्व कौशल, समय प्रबन्ध कौशल व्यक्तिव विकास कौशल, सामूहिक संघ कौशल आदि के बारे में ज्ञान प्राप्त करें।

समस्याएँः–

जैसा कि हम जानते है कि भारत एक पुरूष प्रधान देश है, यहां पर लड़का–लड़की में भेद–भाव जन्म से ही प्रारम्भ हो जाता है जो शिक्षा–स्वास्थ्य, चिकित्सा व्यवसाय कार्य, राजनीति, खान–पान आदि सभी क्षेत्रों में दिखाई पडता है। सरकार इस भेद–भाव को दूर करने के लिए तथा समानता लाने के लिए अथक प्रयन्त जरूर किया है, लेकिन परिवर्तन ज्यादातर कागजो में ही हुआ है व्यावहारिक रूप में नहीं। कौशल विकास येाजना में भी तमाम सा0, आर्थिक राजनीतिक, पारम्परिक समस्याएं आडे आ रही है जो उसे वास्तविक लक्ष्य से दूर धकेल रही है। इसका एक महत्वपूर्ण कारण यह भी है कि भारत की अधिकांश आबादी (लगभग 70 प्रतिशत) गांवों में निवास करती है जहां पर परम्परा का प्रभाव अभी ही दिखाई देता है सरकार के लिए ग्रामीण क्षेत्रो में प्रशिक्षण दे पाना बहुत बड़ा चुनौती है। नगरीय क्षेत्रों में एक ओर सरकार जहाँ आसानी से केन्द्र खोलने में सफल हो जाती है वही दूसरी और वहां की महिलाएं सुगमता के चलते आसानी से प्रशिक्षण प्राप्त करने लगती है परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में एक ओर जहां सरकार को केन्द्र खोलने में दिक्कत होती है वही महिलाओ को गरीबी, अशिक्षा, यातायात, सुरक्षा, की सुविधाओं के अभाव के चलते प्रशिक्षण लेने से कतराती है।

निष्कर्षः–

बेशक कौशल विकास योजना से महिलाएं प्रशिक्षित होकर रोजगार की ओर तीव्र गति से बढ़ रही है पारम्परिक स्त्री–पुरूष, भेद–भाव धीरे–धीरे समाप्त हो रहा है महिलाएं चाहार दीवारी से बाहर निकलकर

विविध कार्यों में हाथ बंटा रही है लगभग सभी क्षेत्रों में उनकी सहभागिता में उतरोत्तर वृद्धि दृष्टि गोचर हुई है कौशल विकास योजना का लाभ उठाकर महिलाएं आज रेल–डाक–तार के बडे–बडे सरकारी व गैर सरकारी कार्यालयों में नौकरी प्राप्त कर अपने को आर्थिक रूप से सशक्त बना रही है आर्थिक सशक्तता के चलते उनके सामाजिक स्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन घटित हुआ है उनका जीवन भी सवंरने लगा है दासता–बंधन, परतंत्रता से निजात मिली है। वे भी पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने लगी है परन्तु अभी भी इनके उन्नयन हेतु तमाम कार्य अपेक्षित है जिससे कौशल विकास योजना के वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

सुझावः–

ऐसा माना जाता है, कि एक बेटा केवल एक घर का निर्माण करता परन्तु एक बेटी एक नही दो घरों को संवारती है अतः बेटा–बेटी में भेद–भाव को पूर्ण रूप से व्यावहारिक रूप में समाप्त करना नितान्त आवश्यक है। देखने को यह मिलता है लड़के को प्राइवेट स्कूल तथा लड़की को सरकारी स्कूल में शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेजा जाता है। लड़के का सिर दर्द होने पर तुरन्त इलाज के लिए अस्पताल पहुंचा दिया जाता है, परन्तु बेटी चार दिन पड़ी रहती है तब उसकी ओर ध्यान दिया जाता है। रोजगार के लिए लड़के को अच्छे –अच्छे कम्पनियों में दूर–दूर भेज दिया जाता है जबकि बेटी को पास–पड़ोस भी नहीं भेजा जाता है। बेटी को पराया धन समझकर उसे तमाम अवसरों से वंचित कर दिया जाता है जो किसी भी स्वस्थ राष्ट्र के लिए शुभ संकेत नही है।

अतः आवश्यक है, कि महिलाओं हेतु उत्तम स्वास्थ्य, शिक्षा, प्रशिक्षण सुविधाओं के साथ–साथ सुरक्षा मुहैया कराई जाय जिससे निडर होकर महिलाएं विकास के पथ पर आगे बढ़ सकें अगर ऐसा वास्तविक रूप में हो गया तो एक श्रेष्ठ भारत का सपना साकार होने में देर नही होगा

सन्दर्भ ग्रन्थः–

- **प्रसन्ना कुमार (2016) '' भारत में ग्रामीण महिला सशक्तिकरण ''** बहुआयामी एशियाई जर्नल अध्ययन खंड 2 अंक। जनवरी 2016
- **''श्रम एवं रोजगार मंत्रालय''** भारत सरकार दूसरी वार्षिक रिपोर्ट 2017
- **चरणजीत सिंह '' सशक्त होती महिलाएं''** कुरू क्षेत्र पत्रिका अप्रैल 2022
- **कुमार राधा '' स्त्री संघर्ष का इतिहास''** दिल्ली 1984 वाणी प्रकाशन
- **अहूजा राम '' भारतीय सा0 व्यवस्था''** रावत पब्लिकेशन जयपुर

- **डॉ0 नीलम और डॉ0 तनु सेठी '' आत्म निर्भर भारत के लिए महिला सशक्तिकरण''** कुरू क्षेत्र पत्रिका अप्रैल 2022
- **जनगणना 2011** भारत सरकार
- **सूचना विज्ञान केन्द्र** श्रावस्ती जनपद
- **समाचार पत्र पत्रिकाएं** आदि।

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-4, January 2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number-January-2023/05

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

वेद प्रकाश द्विवेदी एवं प्रो0 (डॉ0) श्रीमती शशि बाला

For publication of research paper title

कौशल विकास मिशन से महिलाओं का संवरता भविष्यः देवीपाटन मण्डल के श्रावस्ती जनपद का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-01, Issue-04, Month January, Year-2023.

Dr.Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr.Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com